

नवरात्रि क्या सिर्फ भक्ति के लिए है

आज लोग शक्तियों की भक्ति तो करते हैं, लेकिन उनकी तरह शक्तिशाली नहीं बनते। नवरात्रों में मिट्टी के दीपक क्या जलाने के लिए हैं या उनकी तरह सदा जागती ज्योत शिव परमात्मा से शक्ति लेकर अपनी आत्मा की ज्योति जगानी है। भक्तजन खुद कहते हैं कि वो शाक्तियाँ तपस्विनी थीं, ब्रह्मचारिणी थीं, इसलिए नवरात्रों में वो प्रमुख रूप से ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, परंतु फिर से पतित हो जाते हैं। आप सोचो ज़रा, जिनको वो माँ मानते हैं, तपस्विनी मानते हैं, उनकी जैसी कन्याओं, माताओं के प्रति बुरी दृष्टि रखते हैं। अरे, उनकी तरह कुछ पवित्र बनें तब तो पूजा और भक्ति कुछ सफल हो। वे दस बारह घंटे अपने आप को भक्ति में,



आराधना में लीन करते हैं। बाकि के समय कहते हैं, ये तो कलियुग है, इसमें पवित्र बनना असंभव है। अरे मानव! थोड़ी अपनी

बुद्धि का इस्तेमाल तो करो, जब संकट की घड़ी आती है, तो उस संकट की घड़ी में परिवर्तन के लिए क्या कुछ नहीं करते हैं! और आज इतनी गहरी काली रात सबके मन पर छाई हुई है, सबके अंदर कलह-क्लेश भरा पड़ा है, तो क्या एक नवरात्रि मनाने से कलह-क्लेश मिट जायेगा या निरंतर उस अवस्था में रहना होगा! इस कलियुग की रात्रि में अपने आपको शाब्दिक स्तुति से निकालकर सच्चा ज्ञानवान बनाना चाहिए, तब जाकर आप अपने अंदर छुपे आसुरी गुणों का संहार कर पाएंगे, आपके अंदर शक्ति आएगी। अगर इस रात्रि में परमात्मा शिव द्वारा दिए ज्ञान से आप जागेंगे नहीं तो आप शक्ति कैसे पाएंगे!

जीवन में हर्ष कैसे बना रहे?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

किसी ने कहा है कि मनुष्य और पशु में यह मुख्य भेद है कि मनुष्य तो हँसता है, परन्तु पशु नहीं हँसता। अगर यह सच है तो उस मनुष्य को पशु-तुल्य ही कहेंगे जो हँसता नहीं है। अगर यह सच नहीं है, अर्थात् अगर यह कहा जाय कि पशु भी अपनी तरह से हँसते हैं, तब तो वह मनुष्य जो नहीं हँसते अथवा नहीं मुस्कराते, वे पशु से भी अधिक दुर्भाग्यशाली हैं।

हँसना भी मन में हर्ष होने की एक निशानी है। हर्ष तो हरेक मनुष्य अपने जीवन में चाहता है, परन्तु किन्हीं कारणों से उसका

यदि मनुष्य के मन में दुःख, शोक, अफ़सोस, खेद, चिन्ता आदि की लहर रहे तो उसका मन एकाग्र नहीं हो पाता और योग में भी उसकी एकरस स्थिति नहीं हो पाती। उस अवस्था में यदि मनुष्य परमात्मा को याद करता भी है तो भी उस याद का रंग-ढंग अथवा उसकी रूप-रेखा कुछ और प्रकार की ही होती है। वह याद एक विरह-वेदना, एक मात्र पुकार अथवा एक हीन-दीन की शरण-याचना की तरह होती है जिसमें थोड़ी अशान्ति की लहर का समावेश अवश्य होता है। उदाहरण के तौर पर एक मनुष्य को जब व्यापार में हानि हो जाती है तब ईश्वरीय स्मृति में मन को एकाग्र करना चाहते हुए भी उसका मन स्थिर नहीं होता। वह योग का रस-पान करने के बजाय इधर-उधर भागता है। उसके

भरे हुए अथवा भारी मन से। वह ईश्वरीय स्मृति में रहने का अभ्यास करते हुए या तो ईश्वर से उपालम्भ करता है कि उसने सहायता क्यों नहीं की या उसकी शरण में जाना चाहता है कि अब वह इस विकट परिस्थिति से किसी प्रकार बचाये। तो जिस मनुष्य का मन कल तक सहज ही ईश्वरीय याद में टिक जाता था, आज उसके मन में हर्ष अथवा मोद न होने के कारण उसे मन को स्थिर करने में भी रुकावट महसूस होती है और इस प्रकार योग द्वारा जो आनंद मिलता था, वह भी नहीं मिल पाता।

इसी प्रकार, मान लीजिए कि एक माता ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहती है। परन्तु एक दिन उसका पति, जो कि वासना को छोड़ना नहीं चाहता, उसे बहुत मारता है। अब वह माता योगारूढ़ होने की कोशिश करती है परन्तु आज उसके मन में यह विचार चलते हैं कि- "पता नहीं यह बंधन कब छूटेगा? जीवन को अच्छा बनाने के कार्य में पता नहीं मेरा पति कब मुझे सहयोग देगा? हे परमपिता शिव, अब आप मेरे भव-बन्धन काट दो, प्रतिदिन की इस यातना से मुझे मुक्त करो! मैं तुम्हारी हूँ, तुम उसकी बुद्धि को शुद्धि दो.....!" इस प्रकार आज ईश्वरीय स्मृति में स्थित होने के पुरुषार्थ में थोड़ी-सी अशान्ति की लहर का होना सम्भव है। अतः आज उसका योग एक-रस न होकर, इन लौकिक संकल्पों से मिश्रित हो सकता है। तो देखिये, मुदित अथवा हर्षित अवस्था न होने के कारण, ऐसी भूमिका में योग की एक-तानता भी टूट जाती है। यदि पति से हुई ताड़ना को वह किसी तरह तुरन्त ही भुला सके तब उसका हृदय प्रफुल्लित हो जायेगा और वह अमिश्रित एवं अखण्ड योग से आत्मिक सुख में सहज स्थिति प्राप्त कर सकेगी। अतः योग की पूर्ण सिद्धि को प्राप्त करने के लिए हर्षमय अवस्था का बने रहना ज़रूरी है, वरना यदि मन ऊँट की तरह करवट बदलता रहेगा और कभी दायें, कभी बायें झुकता रहेगा तो योग में एकतानता अथवा सम-तल अवस्था नहीं हो सकेगी।



मन विक्षिप्त हो उठता है। मन को हर्षित अवस्था में लाने के लिए ईश्वरीय ज्ञान और योग एक मुख्य साधन है, परन्तु देखा गया है कि मनुष्य का योग भी तभी ठीक प्रकार से लगता है जब मनुष्य हर्षित अथवा मुदित अवस्था में हो। यद्यपि इस कलियुगी दुनिया में तथा विकारी जीवन में दुःख देखने के बाद ही मनुष्य योग का आधार ढूँढ़ता है, परन्तु

मन में कभी तो यह संकल्प आता है कि मैं अमुक भूल न करता तो इतनी हानि न होती। कभी वह सोचता है कि अब इस हानि को किस प्रकार पूरा करूँ? यह विचार उठता है कि लोग पैसा मांगने आएंगे तो मैं उनको क्या जवाब दूँगा। इस प्रकार धन-हानि के कारण उसके मन में थोड़ी अशान्ति का समावेश होता है। वह ईश्वर को याद भी करता है तो एक



गोरखपुर-उ.प्र.। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय आदित्यनाथ जी महाराज के साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. पारुल तथा ब्र.कु. माधुरी।



मथुरा-उ.प्र.। होली मिलन कार्यक्रम में उ.प्र. के ऊर्जा मंत्री श्रीकांत शर्मा का सम्मान करने के पश्चात् ब्र.कु.कुसुम, ब्र.कु.सुमन तथा अन्य।



मलेवेनुर-कर्नाटक। 1008 गुलाब के फूलों से बने शिवलिंग की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच.डी. कुमारास्वामी, विधायक शिवशंकर जी, जे.डी.एस. के अध्यक्ष बी.चिदानंदप्पा, ब्र.कु.लीला, ब्र.कु.मंजुला, ब्र.कु.शांता तथा अन्य।



नवी मुम्बई। समाज की सेवा में विशेष योगदान के लिए महिलाओं के सम्मान कार्यक्रम में ब्र.कु.शीला को 'रणरागिनी पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए सांसद राजन विचारे। साथ हैं शिव सहकार सेना की अध्यक्षा शिल्पताई सरपोतदार, कॉर्पोरेटर एम.के. मढ़वी, जिला संघटक रंजना शिंदे तथा अन्य।



मंगरोल-सूरत। पच्चीस गाँवों के नव निर्वाचित सरपंचों का सम्मान करने के पश्चात् ब्र.कु. पूर्णिमा, ब्र.कु. तृप्ति, ब्र.कु. शारदा, मोटा मियाँ मांगरोल के गादिपति मताउद्दीन चिश्ती, डॉ. आशा तथा एन.डी.देसाई हाई स्कूल के आचार्य संजय देसाई सरपंचों के साथ समूह चित्र में।



नरवाना-हरियाणा। आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. राजेश, समाजसेवी अनुप गोयल तथा सुरेन्द्र गोयल।